आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2012–2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : बारहवां | अंक : चौथा | अगस्त–2014

4 **अमृतवेला**
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

7 **हे परमात्मा कृपाल !**
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को संदेश

13 **दुखों–सुखों की नगरी**
(स्वामी जी महाराज की बानी)
सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
अहमदाबाद

25 **कर्म और बीमा**
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

34 **धन्य अजायब**
16 पी.एस. आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रम

संपादक	उप संपादक	विशेष सलाहकार	सहयोगी
प्रेम प्रकाश छाबड़ा 099 50 55 66 71 (राजस्थान) 098 71 50 19 99 (दिल्ली)	नन्दनी	गुरमेल सिंह नौरिया 099 28 92 53 04 096 67 23 33 04	राजेश कुक्कड़ परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 अगस्त 2014 –149– **मूल्य – पाँच रुपये**

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

अमृतवेला

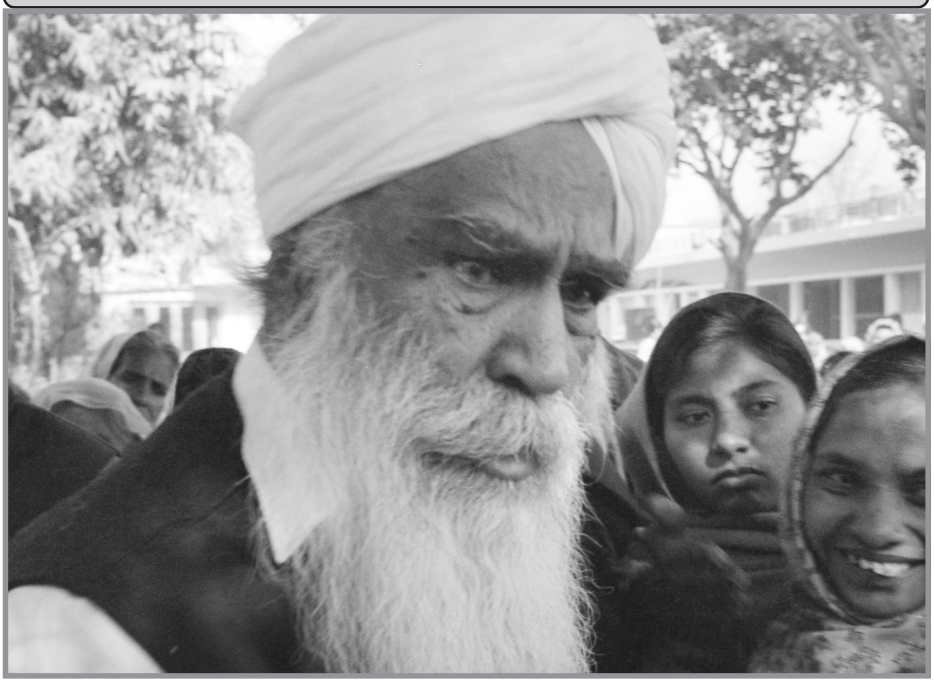

जब से हुजूर इस संसार से गए हैं मैंने कोई नया भजन नहीं लिखा। मैं हुजूर के पास भजन बोला करता था। भजन सुनते हुए कई बार हुजूर की आँखो से पानी गिर जाता था। मैं भजनों में अपने आपको गरीब अजायब लिखा करता था लेकिन आपने मुझे दास अजायब लिखने के लिए कहा।

मेरे दिल में बहुत दर्द होता था। कभी ऐसा नहीं कि भजन बोलने के लिए पहले से तैयारी की हो। आप जो बुलवाते थे वही बोल देते थे। जब कभी रात को आपके साथ सोने का मौका मिला तब आपने कहा, ''हाँ भई! बोल है कोई मसाला।'' उस समय मैं

कहता, ''कूंडा भी आपका डंडा भी आपका, मसाला भी आपका। क्या मसाला कहीं से लाना है?''

मुझे महाराज सावन के चरणों में बैठने का काफी मौका मिला है। मैं सावन की हस्ती से अच्छी तरह वाकिफ था। आपकी मन मोहिनी मूरत मेरे दिल में समाई हुई थी। जब कोई किसी के प्यारे का जिक्र करे तो उसे और क्या चाहिए? उसके लिए कौन सा सोने का सूरज उगेगा? हुजूर जब भजन सुनते तो आपकी आँखो से पानी गिर जाता; आप बहुत प्यार से भजन सुनते थे। हरबंस को भी हुजूर के आगे भजन बोलने का मौका मिला है।

जब मैंने खूनी चक छोड़ा उस समय तक बहुत से भजन लिखे थे, वे भजन कभी संभालकर नहीं रखे थे। लिखने वाले प्रेमी और थे किसी प्रेमी ने लिख लिया तो वह भजन रह गया। ये भजन उस समय के थे जब दिल को कोई होश नहीं था सिर्फ प्यार ही प्यार दिखाई देता था। परमपिता कृपाल धन्य थे। आपने हम गरीबों की खातिर इंसान का चोला धारण किया। इस तन की कोई विशेषता नहीं, यह टट्टी-पेशाब गंद का भरा हुआ थैला है। वह परमपिता हम जीवों की खातिर शरीर धारण करके आया। हमने उस महान आत्मा परमपिता की कद्र नहीं की।

मैं कहा करता हूँ कि रात को जागकर परमात्मा के आगे रोएं कि तू मेरे अंदर है लेकिन मुझसे मिलता क्यों नहीं? मेरा क्या कसूर है? अगर कसूर है तो माफ कर। मैं कसूरों और ऐबों से भरा हुआ हूँ। जिस तरह बच्चे की अंगुली छूट जाए तो वह बच्चा माता-पिता के विछोड़े को याद करके रोता है। इंसान अपने गिरेबान में झाँककर देखे तो वह गुरु के बाहरी सतसंग के भी काबिल नहीं। हम गुरु से बातें करते हैं कि हम सच्चे-सुच्चे हैं। इतना भजन-

अभ्यास करते हैं वह फिर भी हमें मान देता है कि तेरे जैसा कौन है? तू बहुत अच्छा है। यह तो गुरु की ही बड़ाई है।

सावन शाह पेशावर की एक औरत की मिसाल दिया करते थे उसका यह काम था कि वह गली में बैठ जाती जब वहाँ से कोई आदमी गुजरता तो वह उससे कहती, ''तू फलानी औरत के पास से आया है तू बदमाश है।'' जब कोई औरत उस गली से गुजरती तो उससे कहती, ''तू फलाने के पास से आई है तू भी बदमाश है।'' आखिर लोगों ने उस गली से गुजरना ही बंद कर दिया।

इसी तरह अगर गुरु भी शिष्य के ऐब देखने बैठ जाए तो एक भी शिष्य उससे फायदा नहीं उठा सकता। गुरु पर्दापोश और गहर गंभीर होता है। गुरु के अंदर बर्दाशत की शक्ति कमाल की होती है। ऐसा मत सोचें! हमें कोई देख नहीं रहा। काल और दयाल दोनों ताकतें आपके अंदर हैं और आपको देख रही हैं।

गुरु 'नामदान' के समय अपनी सीट पक्की कर लेता है। जब शिष्य कोई बुराई करता है तो काल गुरु को दिखाता है कि देख! तूने इसे 'नामदान' दिया है इसकी क्या करतूत है लेकिन गुरु के अंदर फिर भी बर्दाशत शक्ति है। गुरु काल से कहता है कि यह समझ जाएगा, भला मानस बन जाएगा।

आत्मा के परमात्मा को जगाना हमारा पहला फर्ज है। रात को जागें उसके बिछोड़े को याद करें कि तू मेरे अंदर है फिर भी मुझे क्यों नहीं मिलता? अगर मेरी गलती है तो उसे माफ कर, तू माफ कर सकता है। वह हमेशा आवाज दे रहा है हमने उसकी आवाज को सुनना है। हमारे दिल के अंदर इतनी तड़प होनी चाहिए जिसका कोई अंदाजा ही न हो, तब अपने आप ही अंदर से विरह के गीत उठने शुरू हो जाएंगे। हाँ भाई बैठें। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को संदेश

हे परमात्मा कृपाल!

चलो नीं सईयो सिरसे नूं चलिऐ,
तांघां सोहणे यार दियां, चलो नीं सईयो सिरसे नूं चलिऐ,

परमपिता परमात्मा करण-कारण समर्थ सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने अपार दया करके हमें भक्ति का दान दिया। अभी रेनू और मोतिया जो शब्द पढ़ रही थी यह शब्द उस समय लिखा गया जिस समय महाराज सावन सिंह जी ने सिरसा - सिकंदरपुर खेड़ी में जमीन खरीदी। उस समय यह जगह बेआबाद थी, आजकल तो वहाँ बहुत आबादी है। आपने इस जमीन पर बहुत मेहनत की।

महाराज सावन सिंह जी का सख्त हुक्म था कि यहाँ (सिरसा) मेरा गृहस्थ जीवन है। यहाँ कोई मुझसे मिलने न आए, जिसने मुझसे मिलना है वह डेरा ब्यास आकर मिले। आपको पता है जिसका एक बार अंदर मिलाप बन जाए वह शारीरिक मिलाप के बिना व्याकुल हो जाता है तड़पता है। उसके ऊपर जो बीतती है यह वही जानता है। इस बात में सन्तों का बड़ा राज होता है वे हमारे अंदर प्यार और तड़प बढ़ाना चाहते हैं।

उस समय महाराज कृपाल ने ये शब्द ही संदेश बनाए हुए थे। बीबी हरदेवी (जो बाद में ताई जी के नाम से मशहूर हुई)महाराज सावन सिंह जी और महाराज कृपाल सिंह जी के बीच बिचोलिए का काम करती थी। वह महाराज सावन सिंह जी के पास जाकर महाराज कृपाल की कविताएं सुनाया करती थी।

हमारा जनरल विक्रम सिंह, महाराज सावन सिंह जी का बड़ा प्यारा शिष्य था। उस समय मैं ऑपरेटर था, मुझे उसके साथ महाराज सावन सिंह जी के पास जाने का बहुत मौका मिला। जिस समय ताई जी महाराज सावन को यह शब्द सुना रही थी उस समय मैं वहीं था। यह शब्द सुनकर दिल के अंदर बहुत तड़प और प्यार आया कि जिसके दिल में अपने गुरु के लिए इतनी तड़प है जो अपने गुरु की जूतियों को भी अपने से अच्छा समझते हैं। उस समय मैं नहीं जानता था कि जिसकी यह लेखनी है भविष्य में वह मेरा होने वाला गुरु है। आज हम उनकी दया से ही यहाँ इकट्ठे हुए हैं।

हम सबको अरदास करनी चाहिए कि **हे परमात्मा कृपाल**! हमें भी सद्बुद्धि दे, हम भी तेरे प्यार को, तेरी दया को समझ सकें। **हे परमात्मा कृपाल**! मेरा दुनिया के किसी भी रीति-रिवाज, कर्म-धर्म में विश्वास नहीं रहा। तू मुझे वह नाम दे जो पापियों को पुन्नी बनाता है, पापियों को तारता है और नीच से ऊँच करता है।

हे परमात्मा कृपाल! मुझे पता है कि तुझे भक्त प्यारे हैं। तू हमें भक्ति का दान दे ताकि हम भक्ति करके तेरे प्यारे बन सकें। हे परमात्मा कृपाल! मुझे पता है कि तू पापियों को तारने वाला है। हम बहुत पाप और गुनाह करके तेरे द्वारे पर आए हैं तू हमें बख्श दे। **हे परमात्मा कृपाल**! तुझे बख्शनहारा कहते हैं, तू बख्शिंद है अगर हमने इतने सारे पाप-गुनाह न किए होते तो तू किसे बख्शता?

हे परमात्मा कृपाल! मैं दुनिया के धन-दौलत, अपने रूप और भजन-पाठ का क्या मान करूं? मुझसे पहले ही बहुत सारी सखियां तेरे द्वारे पर खड़ी हैं, वे एक से एक अच्छी हैं। वहाँ मेरा नाम किस गिनती में है? मैं जब अपने गुनाहों की तरफ देखता हूँ तो मेरा सिर शर्म से झुक जाता है लेकिन जब मैं तेरी बख्शीश की तरफ देखता

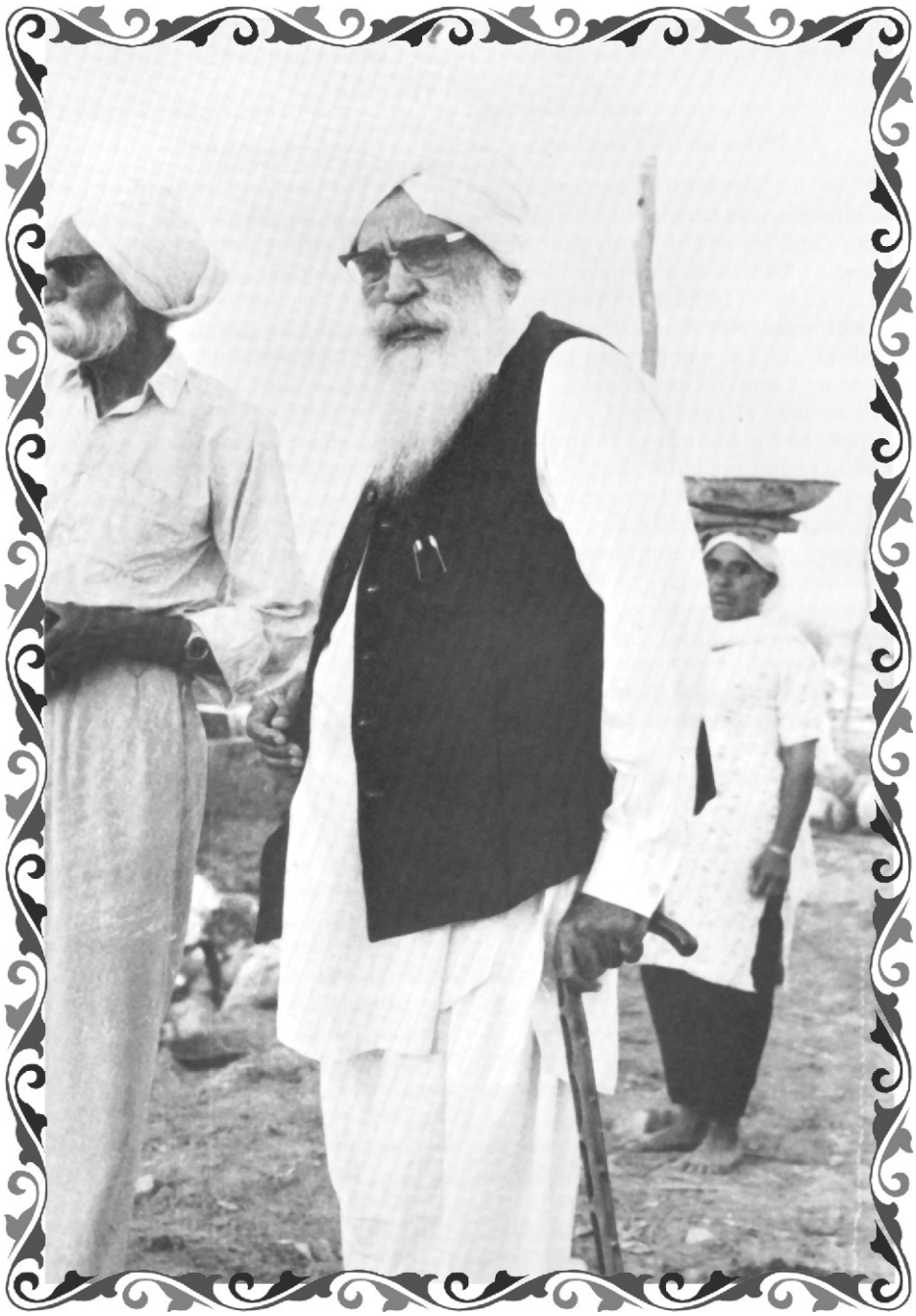

हूँ उस समय मेरा सिर ऊँचा हो जाता है कि हमें वह बख्शनहार दाता कृपाल के रूप में मिला है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हम गुनाह करके न मानें तो हम एक गुनाह और कर रहे होते हैं।'' अगर हम इस जन्म के गुनाह बारीकी से गिनें तो गुनाहों का कोई अंत नहीं होता। हमें पिछले जन्मों का तो ज्ञान ही नहीं कि हम पापों की कितनी गठरियां बांधकर घूम रहे है? दिन-रात हमारा मन अंदर ही बैठा कभी किसी को दोस्त तो कभी किसी को दुश्मन बनाता है।

वह कृपा करने के लिए ही संसार में आता है। हमें उसके आगे अरदास करनी चाहिए कि अब हम भटककर तेरे द्वारे पर आए हैं तू हमें अपनी भक्ति का दान दे। **हे परमात्मा कृपाल**! मैं तेरा बच्चा हूं, तू माता की तरह मुझे अपना दूध पिलाकर बड़ा कर। हे परमात्मा कृपाल! मैं तेरा बछड़ा हूं तू मेरी गाय है; तू मुझसे अपनी दया का दूध मत छिपा। मैं तेरे द्वार पर आया हूँ। मैं भूखा, प्यासा हूं मुझे अपनी दया का दूध पिला।

हे परमात्मा कृपाल! तू मेरी चिड़ियां माँ है, मैं तेरा बोद हूँ। तू मुझे अपने अंदर के शब्द का चोगा चुगा। तू मेरी हिरनी माँ है, मैं तेरा हरनोटा हूँ। मैं प्यासा हूँ तू मुझे अपनी दया का दूध दे। हे परमात्मा कृपाल! मैं बेसहारा हूँ तू मेरी इस तरह रक्षा कर जिस तरह पश्चिम के लोग अपनी पत्नी की पीठ पर हाथ रखते हैं; तू भी उसी तरह मेरी पीठ पर अपना हाथ रख।

हे परमात्मा कृपाल! मुझे यकीन है कि तुझे भक्ति प्यारी है, तुझे भक्त प्यारे हैं। मेरी दिन-रात तेरे आगे यही विनती है कि तू मुझसे भक्ति करवा ले।

परमात्मा कृपाल की दया से हमें आठ दिन भक्ति करने का मौका मिला। आपने अपने घरों की जिम्मेवारियां निभाते हुए रोज-रोज भजन-सिमरन करना है। सतसंग भजन की बाड़ होती है। जहाँ भी प्रेमी, ग्रुप लीडर सतसंग करते हैं गुरु की याद बनी रहती है, वहाँ आपने हाजिरी जरूर लगानी है।

महाराज कृपाल ने हमें डायरी रखने के लिए कहा है। डायरी का मतलब अपने जीवन की जाँच-पड़ताल करना है कि मैंने कितनी तरक्की की है और मैं कितने गुनाह कर चुका हूँ? आगे के लिए कानों को हाथ लगाएं कि **हे परमात्मा कृपाल**! आप हमें बख्श ले गुनाह तो पहले ही बहुत हैं अगर और गुनाह करेंगे तो हमारा भजन-सिमरन कैसे बनेगा?

जिन प्रेमियों ने यहाँ आकर तन, मन और धन से सेवा की है हम सबके धन्यवादी हैं। जहाँ भी कार्यक्रम होता है पंजाब और राजस्थान के प्रेमी बहुत सहयोग देते हैं, लंगर में बहुत सेवा करते हैं। हम सबका फर्ज है कि उनके साथ सहयोग करें, उनकी सेवा से फायदा उठाएं और ज्यादा से ज्यादा भजन-सिमरन करें।

यहाँ हर व्यक्ति निस्वार्थ सेवा करता है कोई तनख्वाहदार नहीं है। हमें सेवादारों के उद्यम की कद्र करनी चाहिए। खाना खाकर या निन्दा-चुगली करके यहाँ से न जाएं। हम यहाँ से भजन इकट्ठा करके जाएं ताकि जो प्रेमी यहाँ सेवा करते हैं उनको भी भजन-सिमरन मिल सके।

आखिर में, मैं आप सब प्रेमियों की वापिसी निर्विघन यात्रा की शुभकामना करता हूँ। आशा करता हूँ कि आपने जो भजन-सिमरन इकट्ठा किया है उसे घर जाकर कायम रखना है, रोजाना भजन-सिमरन करना है।

***

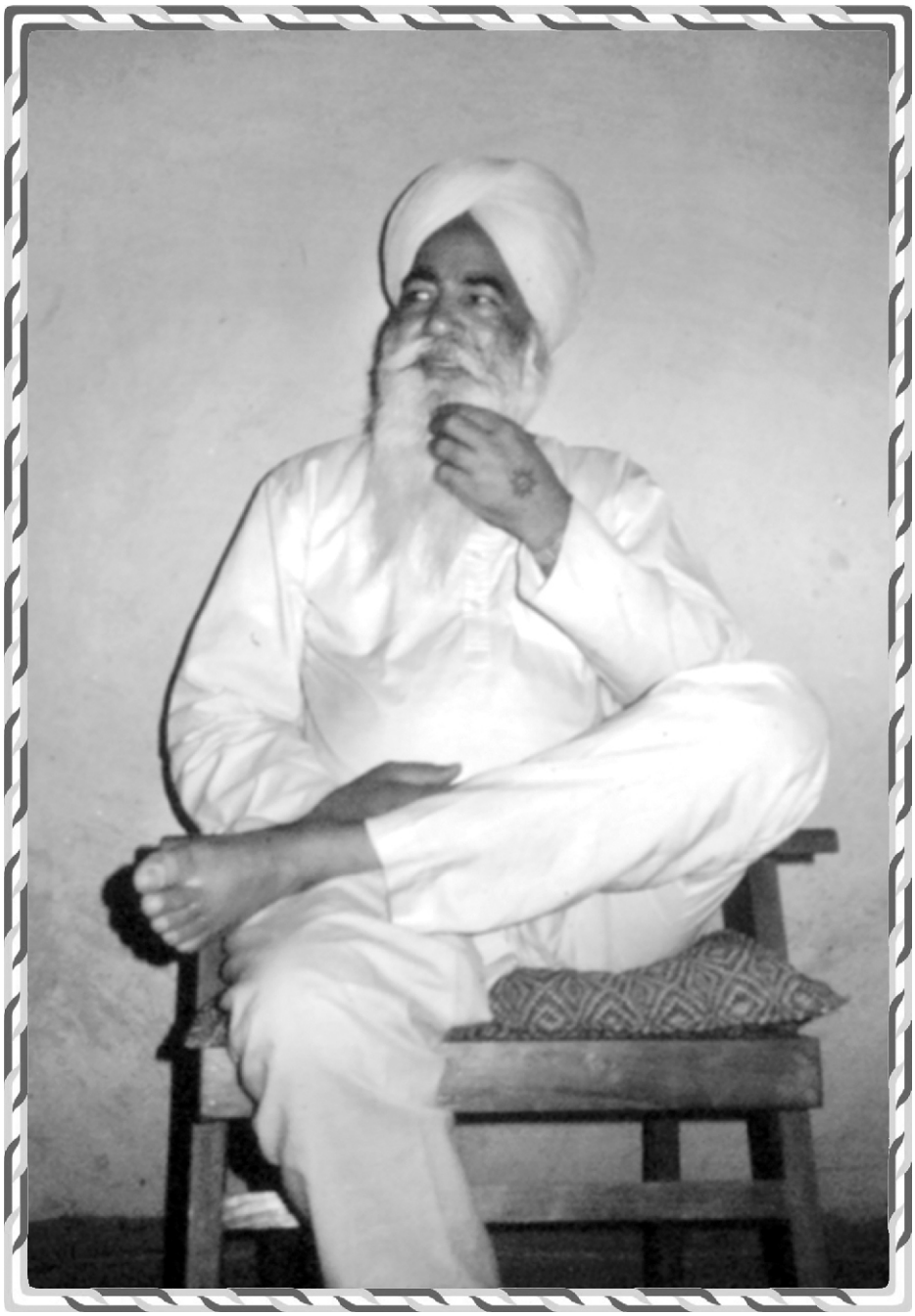

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

दुखों-सुखों की नगरी

स्वामी जी महाराज की बानी

अहमदाबाद

कोई ना किसे दा बेली दुनिया मतलब दी।

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया है। सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे किसी भी युग में आए उन सबका संदेश परमात्मा की भक्ति रहा है। महात्मा न कोई नई कौम बनाने के लिए आते हैं न पहले की बनी हुई कौम तोड़ने के लिए आते हैं; वे हमारे हाथ में डंडे देकर लड़ने की ट्रेनिंग देने के लिए नहीं आते और न ही महात्मा इस संसार को सुखों की नगरी बनाने के लिए आते हैं।

हर युग में दुख-सुख, गरीबी-अमीरी, बीमारी-तंदरूस्ती, मौत-पैदाईश होती आई है। लड़ाई और झगड़े भी सदा ही इस संसार में छिड़े रहे हैं। संसार में बड़ी-बड़ी चोटी के महात्मा आए अगर उनका यही उपदेश होता तो आज यह सुखों की नगरी बन जानी चाहिए थी लेकिन सन्त-महात्मा हमें इस **दुखों-सुखों की नगरी** से निकालने के लिए आते हैं। महात्मा हमें बताते हैं कि हमें जितने भी सुख नजर आ रहे हैं ये सब आरजी हैं पता नहीं इन सुखों ने कब दुखों में तबदील हो जाना है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सहस्त्र दान दे इन्द्र रोवाया, परशुराम रोवे घर आया।
रोवे राम निकाला भया, सीता लक्ष्मण बिछड़ गया।
देहसर रोवे लंक गँवाए, जिन सीता आंदी डमरु आए।
रोवे पांडव भये मजूर, जिनका स्वामी रहत हुजूर।
बाली रोवे नेह पुकार, नानक दुखिया सब संसार।।

गुरु नानकदेव जी हमें बहुत अच्छा नक्शा बनाकर समझा रहे हैं कि इस संसार में जो भी पीर-पैगम्बर, ब्रह्म के अवतार आए

वे भी रोते ही गए। महात्मा इस **दुखों-सुखों की नगरी** में प्यार से 'शब्द-नाम' का संदेश देते हैं। हम आमतौर पर कह देते हैं कि मन को खुला छोड़ दें किसी ख्वाहिश को न दबाएं हर ख्वाहिश पूरी कर लें लेकिन सन्त कहते हैं अगर हम मन को खुल्ला छोड़ देंगे बाहर भटकने की इजाजत दे देंगे तो भटका हुआ मन तबाही मचा देगा।

प्यारेयो! हम अग्नि पर जितनी ज्यादा लकड़ियां, घी या तेल डालेंगे तो आग उतनी ज्यादा भड़केगी अगर हम जलती हुई अग्नि पर पानी डाल दें तो अग्नि बिल्कुल शान्त हो जाएगी। इसी तरह हमारा मन विषय-विकारों और दुनिया के रंग तमाशों में पहले ही भटका हुआ है अगर हम मन को बाहर भटकने की इजाजत दे देंगे तो हमें सारी जिंदगी परेशानी के सिवाय कुछ भी नहीं मिलेगा।

अगर हम किसी भिखारी से उसके पैसे छीनने की कोशिश करें तो वह तैयार नहीं होगा अगर हम उसके हाथ में सोना-चांदी या डालर पकड़ा दें तो कहने की जरूरत नहीं उसकी मुट्ठी अपने आप ही ढ़ीली हो जाएगी।

सन्त ऐसे मुल्क का संदेश लेकर आते हैं जो सदा अमर है। वहाँ मौत-पैदाईश नहीं, विषय-विकारों की आग नहीं; कोई दुख नहीं। हम उस मुल्क में पढ़-पढ़ाई या रीति-रिवाज से नहीं पहुँच सकते। मन ही हमें इस दुनिया में फँसाता है, यह मन हमारे अंदर है। सन्त हमें मन को अपने ठिकाने पर पहुँचाने का तरीका बताते हैं। हमारी आत्मा सतपुरुष की अंश है, मन ब्रह्म की अंश है; मन और आत्मा हमारे अंदर ही है।

सन्त हमें बताते हैं कि हमने सिमरन करके फैले हुए ख्याल को नौं द्वारों में से निकालकर आँखों के पीछे लाना है। मन को

इसके ठिकाने ब्रह्म में पहुँचाना है फिर हमारी आत्मा मन के पंजे से आजाद हो जाती है। आत्मा उस जगह पहुँच जाती है जहाँ शब्द और प्रकाश है। वहाँ पहुँचकर आत्मा को होश आती है कि मैं विषय-विकारों में फँसी हुई थी मन के पीछे लगकर गंदी योनियों में गई यह मेरी गलती थी। आप इसे आत्मा और मन की गाँठ खोलना भी कह सकते हैं।

सन्त-महात्मा कहते हैं कि इस साधन को करने के लिए आपको घर-बार, पुत्र-पुत्रियों को छोड़ने की जरूरत नहीं, मुल्क तबदील करने की जरूरत नहीं और न ही जिस्म पर किसी खास किस्म के कपड़े पहनने की जरूरत है। आप अपने-अपने समाज में रहें अपना-अपना पहनावा पहनें, अंदर विरोधी ताकतों से बचें।

सन्त-महात्मा बताते हैं कि हमनें इस **दुखों-सुखों की नगरी** को छोड़ जाना है? हम मौत को भूले हुए हैं। हम सोचते हैं! हमने कौन सा इस शरीर को छोड़ना है? हमारे लिए तो ऐशों-ईशरते ही हैं। सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे हमें चेतावनी देते हैं देखो भाई! आप जिस धन-दौलत को इन आँखों से देख रहे हैं पहले यह धन-दौलत हमारे बुजुर्गों के पास थी, वे इसके साथ बहुत प्यार करते थे लेकिन इसे साथ लेकर नहीं गए तो क्या हम इस धन-दौलत को अपने साथ लेकर जाएंगे?

आपके आगे स्वामी जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है। स्वामी जी महाराज समझाते हैं कि हम इस नगरी में अपने कर्मों का हिसाब-किताब देने के लिए आए हैं। अच्छे कर्म करते हैं तो हमारा जन्म अच्छे घर में हो जाता है, दिमाग अच्छा होता है; हम ज्यादा से ज्यादा स्वर्ग-बैकुंठो में चले जाते हैं। यह भी अच्छे कर्मों का ही ईनाम है कि हम हुकूमत हासिल कर लेते हैं।

झोंपड़ी से बिस्तर उठाकर महल में लगा लेते हैं, हाथ से झाड़ू निकल जाता है हुकूमत की बागडोर मिल जाती है। हम हुकूमत करने वालों को देखते ही है कि लोग उनका जलूस निकालते हैं, गले में फूलों के हार डालते हैं। हुकूमत में बहुत नशा है सोचते हैं! यह हुकूमत हमारे पास ही रहेगी। हम अखबार पढ़ते हैं रेडियों सुनते हैं किस तरह तख्ता पलट जाता है रातों-रात हुकूमत बदल जाती है। जो लोग सिर पर उठाकर जलूस निकालते थे वे ही गोलियों का निशाना भी बना देते हैं। बुरे कर्म करते हैं तो हमारे लिए नर्क और चौरासी लाख योनियां तैयार रहती हैं।

तजो मन यह दुख सुख का धाम, लगो तुम चढ़ कर अब सतनाम।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप भजन-सिमरन के द्वारा ही इस **दुखों-सुखों की नगरी** से पार जा सकते हैं। आपका घर सतनाम है और आत्मा सतनाम की बच्ची है। हम जब तक आत्मा को मन के पंजे से आजाद नहीं करवाते तब तक अपने घर वापिस नहीं जा सकते। हमें सन्तों की संगत में जाकर ही पता लगता है कि हम यहाँ मुसाफिरों की तरह आए हैं। ये हमारे घर नहीं, हमारी कौमें नहीं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

जो घर छड्ड गँवावणा, सो लग्गा मन माहें।
जित्थे जाए तुध वरतणा, तिसकी चिन्ता नाहे।।

हमने जिस घर को छोड़कर चले जाना है उसे बनाने-सँवारने में लगे हुए हैं। जहाँ जाकर सदा रहना है हमें उसकी चिन्ता ही नहीं, उसकी याद ही भूली हुई है। फरीद साहब कहते हैंः

गोर निमाणी सड करे, निगरयां घर आओ।
सरबर मैथो चलणा, मरने क्यों डराए।।

असली ठिकाना कब्र है। कब्र कहती है कि तूने मेरे बीच ही आना है तो मुझसे क्यों डरता है? कबीर साहब कहते हैंः

ईट सिरहाने होए सबन, कीड़ा गणयो माँस।
केतड़यां जुग बीत गए, इकद भया पास।।

हमें सन्तों की सोहबत और संगत का यही फायदा है कि वे हमें हमारा असली घर असली ठिकाना बताते हैं सिर्फ बताते ही नहीं बल्कि वहाँ पहुँचने में हमारी मदद भी करते हैं।

दिना चार तन संग बसेरा, फिर छूटे यह ग्राम।

स्वामी जी महाराज प्यार से कहते हैं, ''हमने सदा इस वजूद में नहीं रहना। मालिक ने हमारे अंदर गिनकर स्वांस डाले हुए हैं! जब दीपक में तेल खत्म हो जाता है, स्वांसो की माला रूक जाती है। उसी समय लोग टेलिफोन पर बता देते हैं, संदेश दे देते हैं कि फलाने को हार्टअटैक हो गया है, वह मर गया हैं। परमात्मा ने इस तन में चार दिन का बसेरा दिया है यह देह भी छोड़ जानी है और इन घरों को भी छोड़ जाना है।''

धन दारा सुत नाती कहियन, यह नहिं आवें काम।

स्वामी जी महाराज चेतावनी देते हैं, ''हम धन का अहंकार करते हैं क्या गरीबों को सड़कों पर रूलते हुए नहीं देखते? पुत्रों और दोहतों का अहंकार करते हैं क्या ये हमारी सहायता करेंगे, क्या ये हमारे साथ जाएंगे?'' कबीर साहब कहते हैंः

घर की नार बहुत हित जास्यो, सदा रहत संग लागी।
जब ही हंस तजी यह काया, भूत भूत कर भागी।।

जिस औरत के साथ सारी जिंदगी का नाता होता है वह भी सोचती है कि अब इसके अंदर प्राण नहीं। स्त्री ही नहीं मर्द में भी

यह नुख्स होता है। बाप-बेटे, पुत्र-पुत्रियों और धन-दौलत ने तो साथ क्या देना था?

मुझे अफसोस है कि पश्चिम के लोग शादी की महानता को नहीं समझते लेकिन अब हिन्दुस्तान में भी यह प्रभाव बढ़ रहा है जोकि सन्त-महात्माओं की शिक्षा के बिल्कुल उलट है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''शादी एक पवित्र बंधन होता है। घर से जनाजा ही उठे। हमें इसकी महानता को समझना चाहिए।'' सन्तों ने औरत को धन और पिर-पति उस परमात्मा को कहा है।

स्वाँस दुधारा नित ही जारी, इक दिन खाली चाम।

स्वामी जी महाराज हम गफलत की नींद में सोए हुओं को जगाते हैं कि हमारे स्वांसो की माला ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर दोनों तरफ चल रही है। ये स्वांस गिनती के हैं। सोते-जागते, चलते-फिरते समय भी स्वांस कम हो रहे हैं जिसकी पूंजी रोजाना कम हो रही है वह कितना बेफिक्र हुआ बैठा है!

मशक समान जान यह देही, बहती आठों जाम।

जिस तरह मश्क को पानी या हवा से भर देते हैं अगर उसका मुँह खुल्ला है तो उसने एक दिन खाली होना ही है। चाहे तालाब में कितना भी पानी भरा हो अगर हम उसमें पाईप लगा दें तो वह भी खाली हो जाता है।

तू अचेत गाफिल हो रहता। सुने न मूल कलाम।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''तू गाफिल होकर बैठ गया है। तू अचेत बैठा है कि शायद! मुझे मौत नहीं आएगी मेरे लिए तो दुनिया के रंग तमाशे हैं। रोज परमात्मा की आवाज सच्चखंड से

उठकर तेरे माथे के पीछे धुनकारें दे रही है तुझे बुला रही है। अगर हम अपने तन को, अपने ख्यालों को पवित्र रखेंगे तो हमारा मन भी पवित्र होगा। जब हम सही तरीके से आवाज को सुनेंगे तो हमें पता लगेगा कि अंदर आवाज क्या कह रही है? हम अपने सवाल तो उस परमात्मा के आगे रख रहे हैं, प्रार्थनाएं कर रहे हैं लेकिन परमात्मा जो जवाब दे रहा है हम उसे नहीं सुन रहे।''

माया नारि पड़ी तेरे पीछे। क्यों नहिं छोड़त काम।।

वैसे तो हर सन्त ने पाँच डाकुओं का जिक्र किया है, इन्हें कहीं डकैत कहीं चोर तो कहीं पाँच ठग भी कहा है। यहाँ स्वामी जी महाराज काम और क्रोध का जिक्र कर रहे हैं। काम की वजह से हमारी आत्मा नीचे गिरती है, कामी आदमी चढ़ाई नहीं कर सकता। क्रोध से ख्याल फैल जाता है। क्रोधी को शब्द की आवाज सुनाई नहीं देती। जिसे क्रोध का मर्ज है जब उसे क्रोध का दौरा पड़ा हो उस समय आप उसे डाक्टर के पास ले जाकर उसका ब्लड प्रेशर चेक करवाएं उसके खून का दबाव घटा-बढ़ा होगा।

बिन गुरु दया छुटो नहिं या से। भजो गुरु का नाम।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जब हम बीमार हैं डाक्टर के पास जाते हैं तो डाक्टर हमारी अच्छी तरह जाँच परख करता है। डाक्टर मर्ज की दवाई के साथ कुछ परहेज भी बताता है। मरीज के लिए परहेज रखना बहुत जरूरी हैं।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर हमने न दवाई खाई न परहेज ही किया तो हम किस तरह बीमारी से छुटकारा पा सकते हैं?'' सन्त कहते हैं कि हम भी रोगी है हमें जन्म-मरण का रोग है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार भी

रोग हैं। ये रोग तब साबित होते हैं जब हम इन्हें अपना दास बनाने की बजाए इनके दास बन जाते हैं।

सन्त 'नामदान' के समय कई हिदायतें बताते हैं जो सेवक के लिए पूरी करनी बहुत जरूरी होती हैं। अगर हम सन्तों की दी हुई दवाई परहेज रखकर खाते हैं तो सवाल ही पैदा नहीं होता कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आपके हाकिम बन जाएं। सच तो यह है कि ये आपके दास बनकर आपके पास रह सकते हैं।

जगत पास से लेते दान, गोविंद भक्त को करे सलाम।

हमारा जातिय तजुर्बा है जो गुरु का कहना मानता है, शब्द-नाम की कमाई करता है अपने ख्याल को समेटकर आँखो के पीछे लाता है स्थूल, सूक्ष्म, कारण के सारे पर्दे उतार देता है ये पांचो ठग उसके मित्र बन जाते हैं, उसके आगे पर नहीं मार सकते।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जो बच्चा स्कूल में पढ़ता है टीचर भी उसकी तरफ तवज्जो देता है। जो शिष्य 'शब्द-नाम' की कमाई करता है गुरु की हिदायतों का पालन करता है गुरु भी उसकी तरफ तवज्जो देता है। जो बीमारी कर्मों के मुताबिक आपसे चिपटी हुई हैं आप गुरु की दया से भजन-सिमरन से उस बीमारी से छुटकारा पा सकते हैं।''

गुरु का ध्यान धरो हिरदे में। मन को राखो थाम।।

आप प्यार से कहते हैं कि घोड़ा चाहे कितना भी चंचल क्यों न हो, रुकता न हो अगर उसके मुँह में लगाम दे दें तो वह थिर हो जाता है। मन भी चंचल घोड़ा है इसके मुँह में सिमरन की लगाम देनी है। हम जिस चीज को याद करते हैं अपने आप ही उसका ध्यान आँखों के पीछे आ जाता है। जब हम चलते-फिरते, उठते-

बैठते गुरु का दिया हुआ सिमरन करते हैं तो गुरु का ध्यान अपने आप ही अंदर टिकना शुरू हो जाता है। जब सोते-जागते गुरु का ध्यान टिकना शुरू हो जाएगा सिमरन का कोर्स पूरा हो जाएगा तो आप गुरु के पक्के शिष्य बन जाएंगे, इसे कहते हैं:

अकाल मूर्त है साध संतन की, ठहरने की ध्यान को।

महाराज सावन सिंह जी ध्यान पर बहुत जोर दिया करते थे। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''खुदा वह है जो खुद आए।'' आपके कहने का मकसद यही था कि जब गुरु का दिया हुआ सिमरन दिन-रात आपकी जुबान पर चढ़ गया तो अपने आप ही स्वरूप आपके अंदर प्रकट हो जाएगा।

वे दयाल तेरी दया विचारें। दम दम करें सहाम।।

जब बच्चा माता की गोद में चला जाता है तो माता को उसका फिक्र होता है कि इसे कब नहलाना है कब खाना देना है कब धूप से छाया में करना है इसी तरह जब हम अंदर गुरु का स्वरूप प्रकट कर लेते हैं तो वह सांस-सांस के साथ हमारी संभाल करता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आपने अपने घर में अलमारी या कोई और सामान बनवाना है तो आप बार-बार मिस्त्री को बुलाकर लाएंगे इसमें आपका बहुत समय और पैसा खर्च होगा अगर मिस्त्री से प्यार करके उसे अपने घर में ही रख लें तो उससे आप जो चाहे बनवा सकते हैं।''

प्यारेयो! हमारी भी यह हालत है कि हम घंटा, आधा घंटा सिमरन करते हैं और दस-पंद्रह घंटे सिमरन भूले रहते हैं अगर हम चार-पांच घंटे भी अभ्यास करेंगे तब भी दुनिया का पलड़ा भारी रहेगा। सिमरन करना कोई मुश्किल नहीं। जैसे बच्चे खेलते हुए

एक, दो, तीन, चार करते रहते हैं और अपने खेल में मस्त होते हैं। इसी तरह आप अपना कारोबार करें, बातचीत करें लेकिन मन की जुबान से सिमरन करते रहें। जिसने भी कमाई की अंदर गया वह गुरुमत को गलत साबित नहीं कर सका, उसी का होकर रह गया।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जहाँ गुरु दया करता है सहायता करता है आप उस जगह पारब्रह्म में पहुँचें। इसमें कोई शक नहीं कि वह बाहर भी हमारी संभाल करता है। सेवक देखते हैं कि हमारी कितनी संभाल हुई लेकिन बाहर हमारा मन फिर हमें धोखा दे देता है।''

मैं बताया करता हूँ कि जिस समय बलवन्त मेरे पास आई उस समय यह बहुत छोटी थी। मैं जब पहले टूर पर बाहर गया तो यह बच्ची मेरे पीछे उदास हो गई और 77 आर.बी. आश्रम के बाहर की तरफ जाकर बैठ गई। महाराज कृपाल ने इसे सादे रूप में आकर प्यार दिया और कहा, ''बच्चू! मैं तेरे पास हूँ तुझे उदास होने की जरूरत नहीं।'' बलवन्त ने मुझे अमेरिका में पत्र भी भेजा। मैंने वह पत्र वहाँ कई प्रेमियों को दिखाया कि गुरु अंदर भी संभाल करता है और बाहर भी संभाल करता है लेकिन हम नाशुकरे हैं उस एहसान को भूल जाते हैं।

छोड़ भोग क्यों रोग बिसावे। या में नहिं आराम।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप जिन भोगों को मीठा समझते हैं जिनके साथ इतना प्यार करते है जब इनका जोश आता है तो नींद भी नहीं लेते इन भोगों की वजह से बीमारियां और परेशानियां पल्ले पड़ेंगी।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

भोगों रोग सो अंत बिगोवे, आए जाए दुख पाऐंदा।

गुरु का कहना मान पियारे। तो पावे विश्राम।।

अगर अंदर और बाहर शान्ति प्राप्त करनी है तो गुरु का कहना मानें। गुरु हमें 'शब्द-नाम' की कमाई करने के लिए कहता है। विषय-विकारों से मन को मोड़ें, यह मन न कभी तृप्त हुआ है न तृप्त हो ही सकता है।

दुख तेरा सब दूर करेंगे। देंगे अचल मुकाम।

स्वामी जी महाराज आखिर में फिर यही कहते हैं कि यह **दुख-सुख की नगरी** है इसे छोड़कर आप अपनी नगरी सच्चखंड में पहुँचें। जब हम चलते-फिरते, उठते-बैठते गुरु के बन जाते हैं, गुरु का कहना मानकर भजन-सिमरन करते हैं फिर गुरु के ऊपर जिम्मेवारी आती है। गुरु हमारे जन्म-मरण के कष्टों को खत्म करता है। गुरु दुखों की नगरी में बार-बार चक्कर लगाने को समाप्त करके हमें अचल मुकाम में ले जाता है, वह मंडल प्रलय-महाप्रलय में नहीं गिरता।

राधास्वामी कहत सुनाई। खोज करो निज नाम।।

स्वामी जी महाराज हमें प्यार से समझा रहे हैं कि सामाजिक लोग हमसे भक्ति करवाते हैं या दान-पुण्य लेते हैं तो वे हमें नर्कों का डर देते हैं, स्वर्गों का लालच देते हैं। उन्होंने न स्वर्ग देखे होते हैं न वे स्वर्ग में ले जा सकते हैं। सन्तों का रास्ता प्यार का है। सन्त न हमें डराते हैं और न लालच ही देते हैं। अल्लाह, वाहेगुरु, राम, रहीम, गॉड ये लफ्जी नाम हैं, हम इन सबकी इज्जत करते हैं।

सन्त प्यार से कहते हैं ये लफ्ज़ जिस ताकत का जिक्र करते हैं वह ताकत नाम है। हमने नाम से जाकर मिलना है। इसे स्वामी जी महाराज निज नाम कहते हैं।

अगर हमारा कोई मुकदमा है हम रोज जज का नाम लेकर पुकारते रहें या उसकी फोटो के आगे धूप जलाए तो क्या वह फोटो हमारा न्याय कर देगीं! उसे क्या पता है कि ये रोज मेरे आगे लम्बी-चौड़ी अरदासें कर रहे हैं?

सन्त-महात्मा कहते हैं कि आप खुद अपनी आँखों से परमात्मा को देखें फिर उससे कहें, ''हे परमात्मा! हमें यह दुख है, तू हमारे जन्म-मरण के कष्ट को दूर कर। पाँच डाकु हमें दिन-रात बंदर की तरह नचा रहे हैं तू हमें इनसे बचा; हम यतीम हैं।''

यह गांव माझूंवास का वाक्या है। आर्मी से मेरे कुछ पैसे आए मैं वह पैसे लेने के लिए पोस्ट आफिस गया। वहाँ स्कूल के बीस-पच्चीस मास्टर रहते थे। वे एक देवता की तस्वीर के आगे रोज धूप दिया करते थे। धूप की चिकनाहट तस्वीर को लग गई। रात को चूहे ने आधी तस्वीर को खा लिया। उन्होंने मुझसे कहा कि आपके पैसे तो हमने देने ही हैं लेकिन आप हमारे सवाल का जवाब देते जाएं।

मैंने कहा हाँ भई! बताओ तुम्हारा क्या सवाल है? उन्होंने वह तस्वीर मेरे सामने लाकर रख दी और कहने लगे कि हम पढ़े-लिखे हैं लेकिन हम यह मसला हल नहीं कर सके कि इस तस्वीर ने चूहे को नहीं हटाया तो यह तस्वीर हमारा उद्धार किस तरह करेगी? मैंने हँसकर कहा कि आप अंदर उस मंडल में जाएं उस देवता से मिलें।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आपने घर में सन्तों की तस्वीर रखनी है तो उसे दोस्त या अच्छे बुजुर्ग समझकर रखें अगर आप भजन-सिमरन नहीं करते लेकिन उस तस्वीर के आगे सारा दिन नमस्कार करते रहेंगे तो सन्तों का क्या कसूर है?''

***

DVD No - 579

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

कर्म और बीमा

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

सतगुरु सच्चे मेरे दाता दर तेरे ते आ गए।

एक प्रेमी: *मेरा कर्मों के बारे में एक अजीबो-गरीब सवाल है। अगर हमारे कर्मों में बीमारी आने वाली है जिसमें हमें शारीरिक रूप से तकलीफ उठानी पड़ेगी डाक्टर और दवाई का भी खर्च करना पड़ेगा। जब हमारे ऊपर इस तरह का कर्म आता है तो हमें उस कर्म को बर्दाशत करना चाहिए या सब कुछ गुरु पर छोड़ देना चाहिए? या अचानक आने वाले उस कर्म के लिए पहले से ही योजना बनानी चाहिए जैसे बीमारी के खर्च के लिए बीमा पोलिसी ले लेनी चाहिए। आप मुझे इस बारे में कुछ सुझाव दें?*

बाबा जी: हाँ भाई! बहुत अच्छा सवाल है। मैं आपको अपनी तरफ से कुछ बताने की बजाय महाराज सावन सिंह जी का कहा हुआ वचन ही दोहरा देता हूँ। मैंने पहले भी कई बार यह वचन सतसंगों में दोहराया है। महाराज कृपाल ने भी कर्मों के बारे में अपने सतसंगो में इसकी पुष्टि की है। तुलसी साहब कहते हैं:

कर्मप्रधान विश्व रच राखा, जो जस कीन्ह सो तस फल चाखा।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जीव माता के गर्भ में बाद में आता है लेकिन उसकी प्रालब्ध पहले ही तैयार हो जाती है। दुःख-सुख, गरीबी-अमीरी, बीमारी-तंदरुस्ती ये छह चीजें पहले ही मुकर्र हो जाती हैं लेकिन जीव इसलिए परेशान होता है क्योंकि उसे कारण का ज्ञान नहीं होता।'' तुलसी साहब कहते हैं:

पहले बनी प्रालब्ध पाछे बना शरीर।
तुलसी दासा खेल अचरज है पर मन नहीं बंधदा धीर।।

आपको 'नामदान' के समय बताया जाता है कि हम शरीर नहीं आत्मा हैं, शरीर तो हमें कर्मों का भुगतान करने के लिए ही मिला है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जो तीर कमान में से निकल गया है वह हाथ नहीं आता चाहे जो मर्जी यत्न कर लें। जो प्रालब्ध बन गई है सन्त उसे नहीं छेड़ते अलग रख देते हैं; जीव को 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ देते हैं।''

आपको सदा ही बताया जाता है कि हमारी आत्मा पर स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीन पर्दे चढ़े हुए हैं। जैसे एक पिंजरे में दूसरा और दूसरे में तीसरा है। स्थूल जगत सूक्ष्म में से निकला है अगर हम सन्तों के कहने के मुताबिक अपनी आत्मा से स्थूल पर्दा उतारकर सूक्ष्म में पहुँच जाएं तो हमें हर घटना का ज्ञान हो जाता है कि इस घटना के पीछे क्या कारण है और यह घटना क्यों घटी है? फिर यह किताब की तरह खुल जाता है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सन्त जब 'नामदान' बख्शते हैं उस समय सेवक के अंदर इस किस्म का इंतजाम कर देते हैं कि यह कर्मों का भुगतान भी करता रहता है और अंदर तरक्की भी करता रहता है।'' हम काल की नगरी स्थूल जगत में बैठे हैं, यह काल की रचना है बदले का देश है। जो किसी की आँख निकालता है काल उसे आँख की ही सजा देता है। जो किसी का कत्ल करता है वह अगले जन्म में उसी किस्म का भुगतान करता है।

दयाल के राज्य में माफी है वहाँ बदले का नामोंनिशान नहीं। जब हम काल की हद पार करके दयाल के देश में पहुँच जाते हैं तो हमें माफी मिल जाती है। गुरु हमें संसार में माफी देने के लिए ही आता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

दद्दा दोष न दीजे काहू, दोष कर्मा आपणया।
जो मैं कीता सो मैं पाया, दोष न दीजे अवर जणा।
दोष किसे दे प्राणी सब अपना किया कराया हे।।

अब सवाल यह उठता है अगर हमें पता हो तो हम उसका इंतजाम कर लें। जब हम जन्मपत्री (टेवा) देखने वाले ज्योतिषी लोगों के पास जाते हैं तो वे बहुत सी भविष्यवाणियां करते हैं। किसी की भविष्यवाणी गलत तो किसी की सही निकलती है। ज्योतिषी बताते हैं कि तेरे ऊपर यह ग्रह है उपाय करने से यह ठीक हो सकता है लेकिन सन्तों का जातिय तजुर्बा है कि वे कर्म नहीं टाल सकते, कर्म जरूर भोगना पड़ता है। सन्त हमें इन भविष्यवाणी करने वालों के पास नहीं भेजते और न खुद ही इन पर ऐतबार करते हैं। सन्त कहते हैंः

लेख न मिटया हे सखी जो लिखया करतार।

मैं इस बारे में अपने एक रिश्तेदार की कहानी बताता हूँ, जो मैंने पहले भी सतसंग में बताई है कि वह किसी जन्मपत्री देखने वाले पंडित के पास पहुँचा उसने पंडित को कुछ पैसे दिए। पंडित ने गणित विद्या के हिसाब से कुछ ग्रह देखकर उसे बताया कि तू इस महीने में किसी रिश्तेदारी में जाएगा वहाँ जाकर बीमार हो जाएगा और बचेगा नहीं। वह उस महीने में तो उस रिश्तेदारी में नहीं गया क्योंकि उसे वहम में डाला हुआ था। वह अगले महीने उस रिश्तेदारी में चला गया वहाँ जाकर उसे मामूली सा बुखार चढ़ा। उसे बुखार की तकलीफ तो कम थी लेकिन उसके दिल में वहम था।

मैं उन दिनों वैदिक किया करता था। उसका रिश्तेदार मेरे पास आया कि तुम्हारा सरदार जी चोला छोड़ने को तैयार है। मैं जीप लेकर दो घंटे का सफर करके उसके पास पहुँचा। वह मेरे

साथ इस तरह की बात करने लगा कि जैसे वह अभी चोला छोड़ने वाला है। वह बार-बार यह भी कह रहा था कि आप पंडितों-ज्योतिषियों की बात नहीं मानते लेकिन ज्योतिषी ने जो कहा था वह पूरा होने लगा है। मैंने उससे कहा, ''भ्रावा! मैं वैद्य हूँ। मैं तुझे गुरु का आसरा रखकर दवाई दूंगा। मैं तुझे लिखकर देता हूँ कि मैं तुझे अभी मरने नहीं दूंगा आखिर एक दिन तो तूने मरना ही है।''

जब हम वहाँ से चलने लगे तो उसके रिश्तेदार कई किस्म के शगन मनाने लगे। मैंने कहा, ''प्यारेयो! गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि शगन-अपशगन उन्हें लगते हैं जो प्रभु को याद नहीं करते।'' मैने उसे दवाई दी। वह गांव आते हुए बिल्कुल ठीक हो गया। शाम के समय घरवाली से कहने लगा कि बाबा जी बात तो नहीं मानते देख! पंडित का कहना पूरा हो गया। वह फिर भी दिल से नहीं मान रहा था कि मैंने बचना नहीं है। मैंने बहुत कठोर होकर कहा, ''मैंने दवाई दी है तू मरकर दिखा।''

वह प्रेमी अभी भी सतसंग में आता है। हम हँसते हैं कि तू अभी भी जिंदा है। यह वाक्या कम से कम तीस साल पहले का है। प्यारेयो! किसी आने वाले भविष्य की चिंता करके दिल को सताना बीमार होने से पहले ही बीमार हो जाना बहुत बुरी बात है। पता नहीं वह घटना घटे या न ही घटे!

मैं बीमा करवाने को बुरा नहीं कहता। दुनिया में बीमें की स्कीम अच्छी है अगर कोई चाहे तो बीमा करवा सकता है। अब सवाल उठता है कि हमें कर्मों का भुगतान बर्दाशत करना चाहिए या उसका कोई उपाय करना चाहिए? सभी सन्तों ने यह कहा है कि बीमारी का ईलाज करवाना हमारा पहला फर्ज है लेकिन हमें भाणा भी मानना चाहिए कि यह कष्ट हमारे अपने ही कर्मों की

वजह से है। इससे हमारा डाक्टरों से जो पिछला देन-लेन है उसका भुगतान हो जाता है; कुछ कर्मों का कर्ज हल्का हो जाता है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

दुख की घड़ी गनीमत जानो, सुख में रहत सदा मन गाफिल।

सुख में हमारा मन गाफिल हो जाता है। दुख के समय हमारे मन का झुकाव परमात्मा की तरफ होता है। हम अंदर फरियाद भी करते हैं कि हमें बख्शें, पैसे से कुछ भुगतान हल्का हो जाता है।

सन्त हमें हाथ के ऊपर हाथ रखने के लिए कभी नहीं कहते। पुरुषार्थ करना इंसान का पहला फर्ज है। हमें दो प्रकार के रोग लगते हैं अगर हम ठंडे दिल से सोचें तो उनका पता लगाना भी मुश्किल नहीं होता। एक रोग तो हमें अपनी गलती से लगता है थोड़ा सा उपाय करने से वह रोग खत्म हो जाता है, शरीर तंदरूस्त हो जाता है। दूसरा रोग कर्मों की वजह से बीमारी आती है जो भोगे बिना नहीं जाती।

मैंने पहले ही बताया है कि उसका भुगतान डाक्टर का लेन-देन और दवाई पर पैसा खर्च करना है जिससे हमारा बोझ हल्का हो जाता है अगर इलाज करवाने के बाद हमें सफलता नहीं मिलती तो हम गुरु भगवान में नुख्स न निकालें कि हमारी मदद नहीं हो रही। गुरु हमारी मुनासिब मदद जरूर करता है। ऐसे मौके पर हमें बर्दाशत से काम लेना चाहिए, भाणा मानने में ही फायदा होता है।

आयुर्वेद में जड़ी-बूटियों का वर्णन किया गया है। वहाँ गोरखनाथ की एक छोटी सी मशहूर कहानी दी हुई है। गोरखनाथ अच्छी कमाई वाले थे, उनके सिर पर फोड़ा था जिसका उन्होंने बहुत ईलाज करवाया लेकिन वह फोड़ा बढ़ता गया ठीक नहीं

हुआ। गोरखनाथ ने उस फोड़े का कष्ट बारह साल भोगा। बारह साल बाद जब उस कर्म की अवधि पूरी हो गई तो जो बूटी उनके तप-स्थान के पास थी वह बोली कि गोरखनाथ! तू मुझे रगड़कर फोड़े पर लगा, मैं तेरा फोड़ा ठीक कर दूंगी। गोरखनाथ को कर्मों की फिलासफी का ज्ञान था। गोरखनाथ ने उस बूटी से कहा, ''अब इस कर्म की अवधि पूरी हो गई है। तू पहले भी यहीं पर थी, तू अब बोली है तो तेरा नाम गोरखमुंडी हो गया।'' आमतौर पर फोड़े-फुन्सियों के लिए जो दवाई बनाई जाती है उसमें गोरखमुंडी का ही इस्तेमाल करते हैं।

जब हम कर्मों का भुगतान करते हुए किसी डाक्टर के पास जाते हैं तो डाक्टर को हमारे साथ पूरी हमदर्दी होती है। कोई डाक्टर यह नहीं चाहता कि मेरा मरीज दुखी हो। डाक्टर तन-मन से चाहता है कि मेरा मरीज जल्दी अच्छा हो और मुझे यश मिले लेकिन कई बार ऐसा होता है कि अभी हमारा कर्म बाकी होता है इसलिए हमें डाक्टर में दोष नहीं निकालना चाहिए, ऐसे मौके पर सब्र करना बहुत जरुरी है।

महाराज सावन सिंह जी अपने सतसंगों में कर्मों के लेन-देन के बारे में बताया करते थे कि किस तरह हमें अगले जन्म में वहाँ जाकर लेन-देन पूरा करना पड़ता है। आप फरंटीयर की तरफ आर्मी में नौकरी करते थे। आर्मी में साहूकार लोगों की कैन्टीन भी होती है। आर्मी के लोग अपना पैसा उन साहूकारों के पास जमा करवाते हैं, जब छुट्टी पर जाते हैं तो साहूकार से पैसा ले लेते हैं।

आप एक सिपाही का वाक्या सुनाया करते थे। उस समय पठान सीमाप्रान्त में बगावत कर रहे थे। एक सिपाही की घोड़ी भागकर दुश्मन के इलाके में चली गई। वहाँ दुश्मन के लोगों ने

घोड़ी को कई गोलियां मारी, गोली सिपाही को भी लगी वह मर गया। सरकार का यह कायदा होता है कि सिपाही का हिसाब-किताब उसके वारिसों को दे देते हैं। उस सिपाही के ढ़ाई हजार रूपये साहूकार के पास जमा थे जो उसने लालचवश उसके वारिसो को नहीं दिए। वह साहूकार सहारनपुर का था।

अरसा पाकर वह सिपाही लड़का बनकर उस साहूकार के घर पैदा हुआ। वह जवान हो गया उसकी शादी की, शादी के बाद वह बीमार रहने लगा। साहूकार के पास बहुत पैसा था उसने अच्छे-अच्छे डाक्टर बुलवाए, बहुत खर्च किया लेकिन लड़का ठीक नहीं हुआ। जब इंसान हर तरफ से थक जाता है दुखी हो जाता है तो दुखिए को कूड़ भी प्यारा लगता है। साहूकार ने सोचा! किसी तागे-तावीज वाले से ही ईलाज करवाया जाए शायद! इन लोगों की ही कोई दुआ लग जाए।

शहर के बाहर एक मौलवी रहता था। साहूकार ने मौलवी के पास जाकर कहा, ''मेरा एक ही लड़का है, मैंने अभी उसकी शादी की है। मैंने अपने लड़के का बहुत ईलाज करवाया है लेकिन वह ठीक नहीं हुआ अगर आप उसकी कोई दवाई बूटी करें तो मैं आपका बहुत धन्यवादी होऊंगा।'' मौलवी ने कहा कि मैं तेरे घर चलकर लड़के पर दम करता हूँ वह ठीक हो जाएगा।

जब मौलवी ने साहूकार के घर आकर लड़के पर दम किया तो लड़का कुछ होश में आया। साहूकार को बहुत खुशी हुई कि मेरे लड़के ने आज आँखे खोली हैं। साहूकार ने अपनी जेब में हाथ डाला कि मैं मौलवी को बहुत कुछ दूं लेकिन उस समय उसकी जेब में ढ़ाई रूपये थे। साहूकार ने मौलवी को ढ़ाई रूपये देकर कहा कि मेरी जेब में काफी पैसे होते थे लेकिन इस समय ढ़ाई रूपये ही हैं

तू इन्हें ले ले। मैं शाम को तुझे खुश करूंगा। मौलवी ने कहा कि अभी तो मैंने एक दम ही किया है यह कितना अच्छा हो गया। मैं जब शाम को दम करने आऊँगा तो यह बिल्कुल ठीक हो जाएगा।

जब मौलवी घर से चला गया तो साहूकार ने लड़के से पूछा, ''बेटा! अब तू ठीक महसूस कर रहा है?'' लड़के ने साहूकार से कहा, ''क्या तू मुझे पहचानता है कि मैं कौन हूँ ? मैं वही सिपाही हूँ जिसके तेरे पास ढ़ाई हजार रूपये जमा थे, तू हिसाब करके देख ले मेरी बीमारी में जो पैसे लगे हैं उसमें से ढ़ाई रूपये ही बचते थे मैं वह भी दिलवाकर जा रहा हूँ। मैं जिसे ब्याह कर लाया हूँ यह वही घोड़ी है जिसने मुझे मरवाया था। मैं तेरे साथ भी भुगतान करके जा रहा हूँ और घोड़ी की यह सजा है कि अब यह सारी जिंदगी रोया करेगी।''

महाराज जी बताया करते थे कि आप जब हरिद्वार से वापिस आ रहे थे तो आपको वहाँ वही साहूकार मिला। महाराज जी की उस साहूकार के साथ आर्मी से ही वाकफियत थी। साहूकार महाराज जी को अपने घर ले गया कि आज रात आप यहीं रूकें। अगर वह लड़का साहूकार को न बताता तो वह बहुत रोता-पीटता लेकिन जब लड़के ने बता दिया तो वह किसको रोए? लोगों ने चर्चा की कि इसका जवान बेटा मर गया है बहू विधवा हो गई है और यह रोता नहीं कितना कठोर आदमी है।

साहूकार अंदर ही अंदर खामोश था। जब शाम को अच्छे-अच्छे खाने बनाकर परोसे गए तो उसकी पत्नी भी रोने लगी कि हमारा लड़का गुजर गया है इसके दिल को कोई दुख नहीं। बहू रोने लगी कि मेरा पति मर गया है इसे अच्छे खाने की पड़ी है। जब रोने की आवाज आई तो महाराज जी ने पूछा, ''यह किसके रोने

की आवाज है?'' साहूकार ने कहा कि आप खाना खाएं आपने क्या लेना है। महाराज जी ने कहा बता तो सही फिर खाना खाएंगे।

साहूकार ने सारी कहानी बताई कि किस तरह सिपाही को घोड़ी ने मरवा दिया था। मैंने लालचवश उसके ढ़ाई हजार रूपये रख लिए थे। वह मेरे ही घर लड़का बनकर पैदा हुआ वह मुझसे अपना सारा कर्ज ले गया है और मरते हुए मुझे बता भी गया है कि मैं तेरा लड़का नहीं, मैं वह सिपाही हूँ। मैं अपना कर्ज लेने आया था जो पूरा कर लिया है। यह वही घोड़ी है इसे यह सजा है कि अब यह सारी जिंदगी रोएगी। महात्मा जी! अब आप ही बताएं कि मर गया सिपाही, रोती है घोड़ी; मैं किसे रोऊं? महाराज जी आमतौर पर यह वाक्या सतसंग में सुनाया करते थे।

हाँ भई! यह सवाल सब प्रेमियों के लिए बहुत अच्छा था। इस पर बहुत कुछ बोला जा सकता है लेकिन समय हो गया है। सबसे अच्छा यह है कि हम अपने फैले हुए ख्यालों को सिमरन के जरिए इकट्ठा करें तीसरे तिल पर एकाग्र हों अंदर जाकर ही असली फिलोसफी का पता लगता है कि यह घटना क्यों घटी? हम यह किस कर्म का लेखा-जोखा दे रहे हैं।

सेहत का संतुलन ठीक रखने के लिए सभी सन्त खुद भी दवाई-बूटी करते रहे हैं और हमें भी हिदायत करते हैं कि हाथ पर हाथ रखने की बजाय दवाई-बूटी जरूर करें ताकि आप कर्मों का भी भुगतान करते रहें। थोड़ी बहुत आराम की जिदंगी और अच्छी सेहत बना सकें।

***

DVD - 611

धन्य अजायब

16 पी.एस. आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रमः

7, 8, 9, 10 व 11 सितम्बर 2014

24, 25 व 26 अक्टूबर 2014

28, 29 व 30 नवम्बर 2014

26, 27 व 28 दिसम्बर 2014